षष्ठ अध्याय

से. रा. यात्री के आलोच्च उपन्यासों की भाषा शैली का अनुशीलन

6.1. उपन्यास और भाषा -

उपन्यासकार को अपने भाव एवं् विचारों को व्यक्त करने के लिए सरस और सरल भाषा का प्रयोग करना पड़ता हैं जिससे मनुष्य के ऱ्हदयगत भाव को संवेदना के साथ उभारा जा सके । उपन्यास की भाषा उपन्यास के कथ्य को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करके उपन्यास को सार्थक एवं् सफल बनाती हैं । उपन्यास की भाषा उपन्यास के कथ्य तथा चरिंत्रों के अनुकूल होती हैं । डॉ. सुरेश सिनहा लिखते है - "विकलांग भाषा किसी उपन्यास के कथ्य को न तो समर्थ बना सकती हैं, न किसी से संवेदनशीलता की प्रतीति ही दिला सकती है । वह मानवी संदर्भो में कोई सार्थक संज्ञा भी नहीं दिला पाती । अपनी सूक्ष्मता, पैनेपन एवं् काव्यात्मक व्यंजनाओं से ही उपन्यासों की भाषा आज अर्थवान हो सकती है ।"[1] उपन्यास की भाषा प्रसाद, माधुर्य तथा ओज गुणों से युक्त होनी चाहिए । किसी भी उपन्यास की भाषा पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल होना भी जरुरी है । डॉ. सुरेश सिनहा के मातानुसार - "प्रत्येक भाषा का अपना जातीय संस्कार होता हैं, जो यथार्थ तत्त्वों को ग्रहण कर रुप ग्रहण करती है । इसे हम यह भी कह सकते हैं कि भाषा का वह रुप जो हमारा अपना हो । उसके साथ हमारा आत्मीय संबंध स्थापित होना आवश्यक है । प्रामाणिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति तभी अर्थवान हो सकती है, जब भाषा अपने जातीय संस्कारों के साथ सार्वजनिक रुप में कथ्य को उपस्थित करती हैं ।"[2] उपन्यास का निर्माण करने का उपन्यासकार का अपना एक उद्देश्य होता हैं, जो उसके व्यक्तित्त्व के अनुरुप ही होता है । किसी भी उपन्यास को सफल बनानें में भाषा महत्त्वपूर्ण होती है । भाषा के बल पर ही रचनाकार अपनी रचना को सफल बना सकता है ।

शुक्लजी के मतानुसार - "उपन्यासकार के पास दो ही कारगर अस्त्र होते हैं, एक तो उसकी भाषा और दूसरी शैली, जिसकी सहायता से वह अभिप्सित

ंगो के दृष्य-विधान में पात्रों के स्वाभाविक चरित्र उद्घाटित करता है । पात्र-चरित्र, कथोपकथन एवं परिप्रेक्ष्य का स्वाभाविक और सजीव चित्रण -जिससे पाठक के मानसपटल पर एक चित्र-सा खिंचता जाय-भाषा के धनी उपन्यासकार के बिना संभव नहीं है ।"[3]

"वास्तव में पात्रों, परिस्थितियों एवं वातावरण की विश्वसनीयता एवं यथार्थता तभी प्रतिष्ठित की जा सकती है जब इन सब के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया हो ।"[4] भाषा की दृष्टि से यात्रीजी की भाषा उल्लेखनीय है । डॉ.हिरेजी के मतानुसार "हिंदी साहित्य के इस महान शिल्पि की भाषा, शैली और शिल्प उनकी कहानियों के अनुसार सरल एवं आकलनशील है । इतने विराट साहित्य को पढ़ते समय पाठक को शब्दकोश को खोलने की आवश्यकता नहीं पड़ती । उनका वाक्यविन्यास अत्याधिक सरल, शब्दभंडार समृध्द, - जिसमें संस्कृत, अंग्रेजी उर्दू, बँगला तथा आस पास की बोलियों के शब्द भरे पड़े हैं - शैली सरल एवं सुलझी हुई हैं ।"[5]

यात्रीजी के उपन्यासों की लोकप्रियता में उनकी भाषा की सरलता, सजीवता में मुहावरों, कहावतों तथा सुक्तियों का योगदान है । भाषा की विशेषता के कारण उनके उपन्यास पढ़ते समय पाठको को आनंद मिलता है और पाठक उपन्यासकार की मार्मिक अनुभूति के साथ उपन्यासकार की प्रवाहमयी भाषा की प्रशंसा करते हैं । अत: भाषा ही किसी भी कृति को सफल बना सकती है । भाषा के सहारे उस कृति को श्रेष्ठता का स्तर प्राप्त होता हैं।

भाषा के अंतर्गत निम्न रुपों का अध्ययन आवश्यक हैं ।

6.2. शब्दों के विविध रुप -

यात्रीजी के उपन्यासों में शब्दों के विविध रुप प्रयुक्त हुए हैं । जैसे - तत्समशब्द, तदभव शब्द, विकृत शब्द, विदेशी शब्द, अंग्रेजी शब्द तथा अपशब्द इसके साथ ही भाषा में सौंदर्य लाने के लिए विशेषण, मुहावरों, कहावतों, सुक्तियाँ और वाक्य योजना का भी प्रयोग हुआ है । इसी कारण यात्रीजी के उपन्यासों की भाषा सहजता और सौंदर्य को अभिव्यक्त करती हैं ।

6.2.1. तत्सम शब्द -

यात्रीजी की भाषा में तत्सम शब्दों का प्रयोग कहीं-कहीं पर मिलता है । पात्रों की स्थिति के अनुसार भाषा का प्रयोग करना यह उपन्यासकार की विशेषता है । यात्रीजी ने सहजता से पात्रों के अनुसार तत्सम शब्दों का उपयोग किया है, जिसमें भावों की अभिव्यक्ति तथा बोध मिलता है । भाषा को सहज प्रवाहित करनेवाले निम्न तत्सम शब्द हिंदी में घुलमिल गए हैं । "जैसे नमस्कार,"[6]

"जिज्ञासा, गृहिणी, संसार"[7] तथा "भविष्य, ईश्वर, आतिथि, गृहिणी, आशिर्वाद,"[8] आदि ।

6.2.2. तद्भव शब्द -

संस्कृत भाषा हिंदी भाषा की जननी होने के कारण हिंदी में जिस तरह तत्सम शब्द आये हैं, उसी तरह देशी भाषाओं से तथा प्रसंग और परिस्थिति के अनुसार तद्भव शब्द भी हिंदी में मिलते हैं । इससे उपन्यास की भाषा आम आदमी के जीवन की भाषा बनती है ।

जैसे "कागज, नजर"[9] रात"[10] तथा "ऑसु, अचरज, रात"[11] आदि

6.2.3. विकृत शब्द -

परिस्थिति तथा वातावरण का प्रभाव निर्माण करने के लिए विकृत शब्द का प्रयोग किया है ।

जैसे - "मेरबानी"[12] पाँचक, मिंट"[13] तथा हरेक"[14]

6.2.4. विदेशी शब्द —

उर्दु शब्दों का सहज स्वाभाविक प्रयोग हिंदी में होता हैं । उर्दु शब्दो का मूल स्रोत अरबी और फारसी है । उर्दु, अरबी, फारसी कई ऐसे शब्दों हैं, जो हिंदी में स्वीकार हो चुके हैं । यात्रीजी ने उर्दु, अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग किया है । जो भाषा में सहजता लाने में सहायक बने हैं । जैसे -

6.2.5. उर्दू / अरबी /फारसी शब्द —

"महसूस, मरीज, मशहुर, ताज्जुब, गुंजाईश, मायुसी, कुदरत, फिलहाल, बुजुर्ग, शरीर, मुलाकात, शक्ल, इंतजाम, गुमनाम, हैसियत, रहमदिल, मुख्तसर"[15] "इत्तिफाक, तकदीर, बरदाश्त, हैसियत, महसूस, तशरीफ, फिजुल, मक्कार, मसरुफ, मुमकिन, मयस्सर, जिस्म, जरुरत, इत्मीनान, मुखातिब, नामुमकिन, तशरीफ, मुस्कान, महज, इश्क, खलल, रुख, गुमनाम, गहराई, जंजीर, शिकार, मशहूर, हजरत, ख्वाहमख्वाह, लबादा, मरीज, इजाजत, खतरनाक, शराफत, मोहताज, शक्स, बदहवासी, तकदीर, लाजबाब,"[16] शार्मिन्दा, शरीर, मुख्तसर, मुसीबत, मकान, ताज्जुब, कैफियत, इन्तजार, जज्बात, शिनाख्त, दस्तक, दहलीज, शादी, इन्तिहाई, नुमाईश, इन्तजाम, गुंजाइश, महसूस, इजाजत, अहसास, गहराई, तशरीफ, तकलीफ, मुलाकात, हैसियत, शादी, लाजिमी, मेहरबानी, इन्तिहाई, लायक, तोहमत, फिजुल, गहराई, तकदीर लिहाज ।"[17]

6.2.6. अंग्रेजी शब्द -

"पिकनिक स्पॉट, सैरिडोन, केमिस्टस मॉय गॉड, माई गुडनेस, ऐस्प्रो, रेजीडेंस, आरकेस्ट्रा, रेस्तराँ, सॅडिस्ट."[18]

"फिलासफी, स्टेपमदरली, होटल, रायल्टी, डिस्ट्रीब्युटर, सेक्रेटरी, स्टाफ, रिपोर्टिंग, डेस्क्रेप्शन, ट्रायल, पब्लिसिटी, डायरेक्टर, असिस्टंट स्मार्टनेस, डेलीकेसी, स्टार्ट, ट्रेजेडी, अनरियल, हैंडल विथ केअर, बायग्राफी, गैलरी, मीटिंग, ब्रीफकेस, प्लीज, एक्सक्युज, डार्लिंग, फाईनेन्सली, जीनियस, एस्टेब्लिश, इंडस्ट्री फुलफिलमेंट, सिक सोसायटी वुमेन, क्लैपबॉय, सेमिनार ।"[19]

"ट्रेन, स्टेशन, रिटायर्ड, मनीऑर्डर, ऑडिट, डायनिगं, मॅनेजमेंट, डिप्लोमा, रिसेप्शनिस्ट, अपोइन्टमेंन्ट, रजिस्टर, टयुशंस, साईन्स, क्लासफेलो, प्राईमरी, लॉज, प्राइवेट, इम्प्रुवमेंट, एकसपीरियेंस, को-ऑर्डिनेटर, ऑबझर्वेशन, हिस्टिरिया, ड्रेसिंग, एप्वाइन्टमेंन्ट ।"[20]

6.2.7. ग्रामीण भाषा -

यात्रीजी के 'सुबह की तलाश' उपन्यास में ग्रामीण भाषा का प्रयोग हुआ है । जैसे जोस्ती, (ज्योतिषी), गिलासन (गिलास),परसंद(पसंद), डाकदर(डॉक्टर), मनीजर

(मॅनेजर), बेकूफ(बेवकूफ), तुमन्ने(तुमने), बिसकुट(बिस्किट), शैजादे(शहजादे), जंटरवू(इंटरव्हव), भीर(जल्दी), सीसा (शीशा), मोय(मुझे) सादी-ब्याव(शादी-ब्याव)भूको (भूक), मरदन(मर्द), कोऊ(कोई), गामन(गाँव), गमार(गॅवार), सनाकत(शिनाख्त), लैंया(लिए), लाय(ला), चाइ(चाय), नाह(नहीं), सरम(शर्म), बेर(वक्त/समय), भौत(बहुत), निहारो(तुम्हारा), परेस(प्रेस), हओ(हां) ।"[21]

6.2.8. समानार्थी युग्म शब्द - "जब-तब, मार-वार, चाय-वाय, आना -जाना"[22] "मिलना-जुलना, तार-वार, धक्का-मुक्का, आते-जाते"[23] लस्टम-पस्टल, खाना-वाना, जैमत-फैमत, होटल-सोटल, लस्त-पस्त, काम-धाम, भेंट-वेंट, गोल-मोल, जर्मनी-वर्मनी, अधिकार-वधिकार, माल-वाला, येन-केन, उलट-पुलट, चाय-वाय, साफ-वाफ, खूब-बूब, समय-वमय ।"[24]

6.2.9. द्विरुक्त शब्द - "सोते-सोते, घुमते-घुमते, एक-एक, पीते-पीते, जरुर-जरुर, कदम-कदम ।"[25]

"अजीब-अजीब, हाय-हाय, धीरे-धीरे, आते-जाते, छोटी-छोटी, कभी-कभी, बहकी-बहकी ।"[26]

"साफ -साफ, साथ-साथ, बैठे-बैठे, कई-कई, होते-होते, उखड़े-उखड़े."[27]

6.2.10. - अपशब्द - कभी-कभी भाषा को पात्रानुकुल बनाने के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है । विषम परिस्थिति के प्रति अपना विरोध प्रकट करने के लिए या किसी विशिष्ट परिस्थिति की यथार्थता का आभास दिलाने के लिए, तो कभी पात्रों की मनोवस्था को उजागर करने के लिए अपशब्द का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे "नालायक, मरदूद, हुडक-चुल्लु, उल्लु, भाड में जाओं ।"[28] उदबिलाव"[29]

6.3. विशेषण - नये विशेषणों का सृजन करके उनके प्रयोग से ही शब्दों को नयी अर्थवत्ता मिलती है । विशेषणों के प्रयोग से भाषा-सौंदर्य की अभिवृध्दि

हुई हैं ।

जैसे - "झुर्रीदार चेहरा,"[30] "कुदरती मुंदर, स्वप्नसुंदरी, शिकारी मनोवृत्ति"[31] तथा "कुशल पाकशास्त्री, सेवापरायण, भोली भावूकता, नाजुक जिम्मेदारी"[32]

6.4. मुहावरें - कहावत

किसी भी रचना की भाषा को प्रभावी बनाने के लिए तथा भाषा में विविधता लाने के लिए मुहावरें तथा कहावतों का प्रयोग किया जाता है । यात्रीजी के उपन्यासों में भी मुहावरें तथा कहावतों का प्रयोग हुआ है ।

6.4.1. — मुहावरें

1)	"जिस्म से तेल निकलना"	33
2)	"चेहरा जर्द पड़ जाना"	34
3)	"घोड़े बेचकर सोना"	35
4)	"खर्राटे लेना"	36
5)	"हालत खस्ता हो जाना"	37
6)	"रोते - रोते बूरा हाल होना"	38
7)	"सिर फिरे के माफिक बात करना"	39
8)	"चेहरा फक पड़ना"	40
9)	"खड़े-खड़े दाँत निकालना"	41
10)	"भाड़ में जाना"	42
11)	"बातों के तुमार बाँधना"	43
12)	"साप सूँघना"	44

6.4.2. कहावतें

1)	"जो होता हैं ठीक ही होता हैं ।"	45
2)	"खाली जेब मटकते नैनं ।"	46

6.5. सुक्तियाँ —

जीवन की सत्य अनुभूति को ही सुक्तियों के रुप में रखा जाता है । डॉ. धनराज मानधानेजी के मतानुसार - "सुक्ति जीवन के अनुभव का गहरा निचोड़ होता हैं । सुक्ति जीवन के अनुभव का गहन चिंतन और लेखक की प्रतिभा और क्रांतिदर्शिता का उत्कृष्ठ उदाहरण हैं । वास्तविक स्थिति का अनुभवों के बल पर किया गया वर्णन सुक्तियों के अतिरिक्त अन्य किसी विधा में नहीं मिल सकता ।"[47]

* "जब लोगों के दिलों से संतोष कूच कर जाता है तो उन्हें अपना साया भी भारी पड़ने लगता है । तब वे जीने के सहारें नहीं खोजते, मरने के बहाने तलाश करने लगते है ।"[48]

* "बाहरी आदमी से मिलते वक्त अपने घर में सहज संयत अवस्था शायद पहली शर्त हैं ।"[49]

* "मौलिकता के नाम पर सिर्फ आपने एक ठण्डी तटस्थता का विस्तार किया है जिसका एक सिरा आत्मकेंद्रित होने में छिपा है, तो दूसरा दिग्भ्रम में ।"[50]

* "कभी-कभी मामूली-सी चीजें लोगों को आपके प्रति गहराई से शुक्र गुजार कर जाती है पर यह छोटे-छोटे फेवर भी जिंदगी की आपाधापी में कहाँ निभ पाते है ।"[51]

* "प्यार एक भावना है और मकान एक आवश्यकता है । दुनियावी उपलब्धियाँ न हो तो प्यार भी दम तोड़ जाता है ।"[52]

* "प्यार से पहले आदमी और औरत और किसी भी वस्तु को महत्त्वपूर्ण नहीं मानते लेकिन एक-दूसरे से जुड़ जाने के बाद साथ-साथ रहने के लिए एक कोठरी तक जुटाने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देना पड़ता हैं ।"[53]

* "असाधारण प्रतिभा-संपन्न लोग अपनी घरेलु जिंदगी गंगाजल की तरह पवित्र और दूध जैसी उजली दिखाने के लिए बेचैन रहते हैं ।"[54]

* "प्रेम ? यह चीज़ कहाँ होती । मैंने इसके बारें में उसी तरह बहुत कुछ सुना है जैसे लोग सर्व शाक्तिमान ईश्वर के बारें में न जाने क्या-क्या कहते हैं लेकिन कोई ऐसा गवाह सामने नहीं आता जिसने खुद अपनी आँखो से उसे देखा हो ।"[55]

* "सौंदर्य कई बार अपनी मुग्ध करनेवाली शाक्ति से अनजान होता है । इसके अलावा देखनेवाले की आँखों में ही असली नशा होता हैं ।"[56]

* "रिश्ते कभी परिभाषा के मोहताज नहीं होते ।"[57]

* "मौत का एक दिन मुअय्यन (निश्चित) है ।"[58]

* आदमी को थोड़ा-सा भी सहारा मिल जाता है तो कितनी जल्दी बह(उसका अभ्यस्त हो जाता है । सहारा या सुविधा हटते ही दीन-हीन अशक्त हो उठता हैं ।"[59]

6.6. वाक्य - विन्यास —

उपन्यास में कथानक की नवीनता का सार्थक प्रयोग करने के लिए रचनाकार नयी वाक्य परंपरा की शुरुआत करता है । नवीन वाक्यों के प्रयोग में पात्रों की मानसिक अवस्था के अनुकूल अधूरे वाक्यों का भी सहारा लिया जाने लगा । इसका परिणाम नये वाक्यों का प्रयोग आधुनिक युग में होने लगा ।

अ) अंत में कर्ता वाले वाक्य -

1) "आखिर बात क्या है, करुणा !"[60]

2) "लेकिन रात ज्यादा बीत चुकी है, नीना जी।"[61]

3) "नाम से क्या फर्क पड़ता हैं, मलिक साहब !"[62]

4) "यहीं बात तो मैं कहता हुँ, राकेश से "[63]

5) "शादी कब हो रही है, बीना की "[64]

6) "यह तो बहुत बुरी बात हुई राकेश।"[65]

7) "फालतु में वक्त बर्बाद मत करो देवी जी।"[66]

ब) पात्रों की परिस्थिति, मानसिक उद्वेलन के वाक्य

1) "मौसी ने बहुत बचपन से मेरा पालन-पोषण करके मेरी देह बचाई है ..... अब उनके शरीव को चलाना मेरा काम है .... ।"[67]

2) "हाँ मैं भी कभी-कभी यह सोचने की हिमाकत करती हूँ लेकिन ....।"[68]

3) "मैं तो अब बीते जमाने का इतिहास भर हूँ ......।"[69]

4) "नहीं-नहीं यह शांति नहीं है मलिक साहब, यह चुप्पी है ...... एक बहुत भयानक चुप्पी।"[70]

5) "मैंने उससे शादी नहीं की। यह मेरी सत्यानाशी उम्मीदें ही थी जिन्होंने मुझे गैदं डाला। मैं एक बहुत ही कच्ची और नाजुक उम्र में सपनों के हाथों बरबाद हो गई .....।"[71]

6) "मैं, किसी को पसंद आ जाऊँ क्या यहीं काफी है ......मेरी पसंद या नापसंद का कोई अर्थ नहीं है ?"[72]

इन वाक्यों द्वारा पात्रों के मानसिक उद्वेलन की स्थिति का पता चलता है।

6.7. व्यंग्य —

"वि.+अंग"-व्यंग से व्यंग्य की व्युत्पत्ति मानी गयी है। डॉ. हिरेजी के मतानुसार - "हास्य व्यक्तित्त्व की सहजता एवं पवित्रता का द्योतक है किन्तु व्यंग्य का उपयोग केवल हैसी मजाक के लिए न होकर कुछ उद्देश्य को लेकर किया जाता है। "[73]डॉ. मानधानेजी के मतानुसार - कोई लेखक जब हास्य को अपना हथियार बनाकर,

सामाजिक कुरीतियों को दंड देना (टु पनिस विथ लाफर) चाहता है, तब व्यंग्य का निर्माण होता है ।"[74] डॉ. हिरेजी व्यंग्य के बारे में कहते हैं— "व्यंग्य में किसी की निंदा के पीछे सामाजिक हित और वर्तमान समस्याओं पर ध्यान रहता है ।"[75]

यात्रीजी एक अच्छे व्यंग्यकार है । यात्रीजी अपने 'बीच की दरार' उपन्यास में गंजे लोगों पर व्यंग्य से टिपन्नी करते है - "गंजेपन से कोई खास फर्क नहीं पडता, गंजे लोग औरतों में अपने तई एक खास किस्म की दिलचस्पी पैदा कर देते है ।"[76] कई लोग अपनी सजीव नारी या पत्नी को नुमाईश में रखनेवाली कॉच की वस्तु की तरह संभालते है, उस पर यात्रीजी व्यंग्य कसते हुए कहते हैं - "इसमें आदमी को दो तरह का सुख मिलता है । एक तो यह कि देखिए मेरी बीवी कितनी खुबसुरत और सलीकेदार है और दूसरे यह कि गौर कीजिए मैंने इसको कितनी हैंडल विथ केअर बरता हैं ।"[77]

से.रा.यात्री ने समाज में जो दहेज की परंपरा है उसपर व्यंग्य कसा हैं । आज समाज में शादी के लिए लड़की दिखाने के बहाने लड़की को प्रदर्शनीय चीज बनाया जाता है । आधुनिक युग में भी लड़की को नुमाईश की चीज बनाया जाता है इससे बड़ा निर्दय व्यंग्य क्या होगा । यात्रीने अपने 'सुबह की तलाश' उपन्यास में लड़की दिखाने की हमारी परंपरा पर बीना के माध्यम से जोरदार व्यंग्य कसा है । बीना कहती - "अपना देश कितना महान है और कितनी उत्कृष्ठ परंपराओं से विभुषित हैं कि जहाँ औरतें नुमाइश की चीजें होती है ।"[78]

इस तरह यात्रीजी ने अपने उपन्यासों में व्यंग्य का भी सफल प्रयोग किया हैं ।

6.8. अंग्रेजी वाक्य —

* "हीयर इज मिस्टर मलिक दा एमीनैंट कारसपॉन्डैट आफ दा वेल-नोन एंड फेमस मन्थली पर्सनेल्टीज ।"[78]
* "इट इज ए वंडरफुल डेसक्रेप्शन अबाऊट योर बाल्डनैस बट इट मेक्स हार्डली एनी डिफरेंस बाल्डस क्रिएट ए क्रेझ फार फेअर सेक्स ।"[79]
* "बट यु नो इट इज मोर डिस्टर्बिंग टूशन एनी बडी ।"[80]

* “हुज स्पीकिंग प्लीज
  वन एम.के.वर्मा. फ्राम दलही
  ओह आई सी । प्लीज बी हीयर बाई फाईव पी.एम.”[81]

* “व्हाट अ फनी आंसर ।”[82]

* “आई रेफ्लेक्ट माई सेल्फ इन यु ।ब्रेवो।ब्री कन्फीडेंट ”[83]

* “वैल सैड-सो ग्रांड - हाऊ सरमनली ! रियोली अमेंजिंग”[84]

* “टाईम हेज कम आफ फुलफिलमेंट ऑफ योर लॉग-लॉग चोरिस्ड ड्रीम माई बुआय ।”[85]

6.9 मिश्र वाक्य —

* “नीना डालिंग, देअर इज़ ए विजिटर फॉर यु प्रिय नीना यहाँ आकर देखो, तुमसे कोई मिलने आये हैं । जल्दी आकर पहचानो कि यह कौन मेहमान है । ”[86]

* “आई वेलकम यू मिस्टर गैस्ट , मेहमान का स्वागत करती हूँ - मैं अभी एक मिनट में ही उधर आ रही हूँ ।”[87]

* “आम आस्किंग इन ए फ्रेन्डली मैनर । आपने अभी तक अपना कोई लाईफ पार्टनर तलाश नहीं किया ?”[88]

* “यु आर माई कुलिग नाट माई सर्वेन्ट - तुम मेरे सहयोगी हो - नोकर नहीं हो - क्या मैं तुमसे खुद मिलने नहीं आ सकता ?”[89]

निष्कर्ष —

निष्कर्ष में हम कह सकते है कि भाषा के योगदान से यात्रीजी के उपन्यासों की रोचकता, प्रवाहमयीता, सहजता और स्वाभाविकता में वृध्दि हुई है । उपन्यास की भाषा में अरबी, फारसी शब्द भी है जो माधुर्य के साथ-साथ सरल, सुबोध एवं मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति करने में सक्षम है । भावानुरुपता, परिस्थितिनुकूल, प्रसंगानुकूलता, सजीवता, सरलता, से तथा हू-ब-हु चित्र पाठकों के मन: चक्षु के सामने उपस्थित करने में यात्रीजी की भाषा सक्षम है । साथ ही मुहावरें सुक्तियाँ इनके सहज प्रयोग से भाषा में सप्राणता दिखाई देनी है ।

यात्रीजी की भाषा में उपर्युक्त गुणों के साथ ही लयात्मकता, संवेदनशीलता भी प्रचुर मात्रा में स्पष्ट दिखाई देती है । यात्रीजी ने अपनी अनुभूति को शब्दों से अलंकृत करके भाषा को आकर्षक और प्रभावी बनाया है । लेखक की भाषा में सहजता है । यात्रीजी ने जीवन के विविध आयामों को वास्तव के धरातल पर सफल अभिव्यक्ति दी है । यात्रीजी ने पात्र और परिवेश के अनुकूल शब्द प्रयोग किया है । पात्रों की यथार्थ जिंदगी को अभिव्यक्त करने में यात्रीजी की भाषा प्रभावपूर्ण तथा सक्षम साबित हुई है । अत: यात्रीजी की भाषा में अपने उपन्यास के कथ्य को सार्थक एवं सफल रुप में पाठकों के संमुख अभिव्यक्त करने का सामर्थ्य जरुर है ।

यात्रीजी की भाषा में ग्रामीण शब्द तथा अपशब्द का प्रयोग भी हुआ है, जिससे भाषा पात्रानुकूल और यथार्थ बन चुकी है । यात्रीजी की भाषा पात्रों के परिवेश एवं वातावरण को भी उभारती है । समानार्थी युग्मशब्द तथा द्विरुक्त शब्दों द्वारा भाषा का माधुर्य बढ़ गया है । कुदरती सुंदरता, शिकारी मनोवृत्ति, आदि भाषागत प्रयोगों के माध्यम से उपन्यासकार ने नये-नये विशेषणों की तलाश की है । मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा जानदार बनी हैं । यात्रीजी द्वारा प्रयुक्त सुक्तियाँ जीवन की सत्यानुभूति, जीवनानुभवों की गहराई, गहन चिंतन, अनुभवों की सूक्ष्मता को साकार करती है । इन सुक्तियों के माध्यम से भाषा का मांगल्य बढ़कर भाषा प्रभावी बन चुकी है । भाषागत प्रयोगशीलता के नाम पर अंत में कर्ता का प्रयोग, पात्रों की उद्वेलित मनस्थिति का उचित ढांचे में प्रस्तुतीकरण उपन्यासकार ने किया है । अंग्रेजी वाक्य, मिश्र वाक्य आदि के प्रयोग से भाषा को पात्रानुकूल बनाया है । संक्षेप में भाषा की दृष्टि से यात्री के आलोच्च उपन्यास सफल है ।

6.10. शैली —

अन्य साहित्यिक विधाओं में उपन्यास साहित्य ही समय की कसौटी पर खरा उतरा है । हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा वर्तमान जीवन की सशक्त अभिव्यक्ति है । डॉ. श्यामसुंदरदास शैली के बारे में लिखते हैं — "किसी कवि या लेखक की शब्दयोजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्य की बनावट और उसकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है ।"[90] तो गुलाबरायजी के मतानुसार - "शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते है, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रुप से दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है ।"[91]

किसी भी शैली का संबंध उस रचना के साथ-साथ रचनाकार से भी होता है । इसी कारण उस रचानाकार का परिवेश, उसकी अनुभूति, उसके संस्कार, उसकी शिक्षा आदि बातों का महत्त्व उसके साहित्य निर्माण में होता है । लेखक के व्यक्तित्व की छाप उसकी शैली में समाविष्ठ होती है ।

"शैली शिल्प उपन्यास के कथानक, चरित्रचित्रण एवं भाषा आदि को एक नये ढंग से प्रस्तुत करने का कार्य करता है, जिससे उपन्यासों में नवीनता एवं अभिनव प्रयोग उपस्थित हो सके । उपन्यासकार की अभिव्यक्ति को शैली शिल्प नया रुप प्रदान करता है ।"[92]

कोई भी रचनाकार अपनी व्यक्तिगत अनुभूति को किसी अलग ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश में नये-नये प्रयोग करता है । समाज के संदर्भ में मानवजीवन का व्यापक तथा यथार्थ चित्र उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त करता है । घटनाओं एवं पात्रों को यथार्थ, सजीव और प्रभावी बनाने के लिए उपन्यास के तत्व देश-काल-वातावरण का चित्रण करता है । लेखक या रचनाकार उपन्यास की कथावस्तु की सफल अभिव्यक्ति के लिए अपना एक खास ढंग अपनाता हैं, उसे शैली कहते है । "रचनाकार अपने आशय को विशेष पद्धति से व्यक्त करने का प्रयास करता है । उसे 'शैली' कहा जाता है ।"[93]

सुरेशकुमार जैन के मतानुसार - "उपन्यास की शैली उपन्यास के अंतरंग तथा बहिरंग दोनों सौदर्य पक्षों को उद्घाटित करने का प्रबल साधन है ।"[94]

लेखक अपनी वैयक्तिक अनुभूति को ही शब्दों में ढालकर एक विशेष ढंग से अभिव्यक्त करता है । दुर्गाशंकर मिश्रजी के अनुसार - "वास्तव में भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और उस माध्यम के प्रयोग की रीति शैली है । हिंदी साहित्य के प्रारंभिक उपन्यासों में वर्णनात्मक शैली प्रचलित रही । आज उपन्यास के क्षेत्र में अनेक शैलियाँ प्रचलित रही है ।"[95]

6.11. विविध शैलियाँ —

उपन्यासकार अपने उपन्यास में किसी एक ही शैली का प्रयोग नहीं करता । उपन्यास की कथावस्तु के अनुसार अनेक शैलियों का प्रयोग करता है । यात्रीजी ने उपन्यास में विविध शैलियों का प्रयोग किया है, जिनमें से कुछ शैलियाँ अत्यल्प मात्रा में अभिव्यक्त हुई है । यात्रीजी के आलोच्य उपन्यासों में निम्न शैलियों के दर्शन होते हैं —

(क) वर्णनात्मक शैली —

वर्णनात्मक शैली परंपरागत मानी गयी है । वर्णनात्मक शैली में प्रत्येक दृश्य का सरल और सीधे-सादे ढंग से बर्णन किया जाता है । उपन्यास के पात्रों का परिवेश तथा उनकी परिस्थिति के चित्रण के माध्यम से संपूर्णता का आभास दिलाने के लिए वर्णनात्मक शैली, विशेष रुप से उपयोगी है । उपन्यास मे चित्रित घटनाओं तथा बाह्य दृश्यों को इस शैली में अभिव्यक्त करके यथार्थता को स्पष्ट किया जाता है ।

यात्रीजी का 'सुबह की तलाश' (1994) उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखा हुआ है । इस शैली के आधार से उपन्यास के पात्रों की सूक्ष्म क्रियाएँ, चेष्टाएँ तथा परिस्थिति और परिवेश के अनुसार उपन्यास का निर्माण करने में यात्रीजी सफल हुए है । इस उपन्यास का नायक सतीश के बेरोज़गारी से लेकर सफलता तक के सफर को यात्रीजी ने चित्रित किया है । सतीश की बेरोजगारी का वर्णन करते हुए लिखते है - "राकेश के घर में ऊपर की मंजिल में एक खाली कोठरी थी जिसमें घर का फालतु सामान पड़ा रहता था । उसी में सतीश भी अपना बोरिया बिस्तर डालता है ।"[96] राकेश के घर में राकेश की बहन बीना ही सतीश का पूरा खयाल रखती है यहाँ तक कि सतीश को इंटरव्यूव को जाने के लिए पैसे भी

देती थी इसका वर्णन द्रष्टव्य है - "सतीश के लिए उस घर में बीना ही 'मसी-शेल्टर' बनी हुई थी । वह परिस्थितियों के सामने स्वयं भी एक मूक-बधिर की तरह लाचार था और बीना के साथ कोई दावेदारी का रिश्ता न होने के बावजूद कोई ऐसा अनाम संबंध था कि वह उसके उखड़ेपन को सहेज लेती थी ।"[97] इसतरह अनेक कोशिशों के बावजूद भी सतीश को कहीं नौकरी नहीं मिलती.तो वह त्रस्त हो कर आज की रिश्वतखोरी से चिढ़ उठ कर कहता है कि - "किस बात में स्थायित्त्व खोजू ? आज सारे मानदंड बदल चुके है । सारी चीजों और रिश्तो का आधार तो आर्थिक हो गया है । सिर के ऊपर छत चाहनेवाला और पेट के निमित्त रोटी की कामना करनेवाला कभी इतनी नग्नता से पीडित नहीं हुआ जैसा कि आज देखने में आ रहा है । नैतिकता, संकोच, छीन-झपट और आपाधापी के नीचे पिसकर दम तोड़ चुके है ।"[98] सतीश के इस कथन के माध्यम से लेखक वर्तमान युग की वास्तव स्थिति का यथार्थ ढूँढने में सफल हुए है । आज समस्त समाज में रिश्वतखोरी बढ़ चुकी है कि इसके चक्कर में आम आदमी अपना दम तोड़ देता है यह सच्चाई है ।

यात्रीजी का दूसरा उपन्यास 'बीच की दरार' (1978) असल रिपोर्ताज शैली में लिखा हैं किंतु उसमें भी कहीं-कहीं वर्णनात्मक शैली दिखाई देती है । नीना के कथन से यात्रीजी ने पुरुषों के असली स्वभाव का वर्णन किया है । वर्तमान युग में भी कहीं-कहीं ऐसे उदाहरण देखने को मिल सकते है । आदमी हमेशा यहीं चाहता है कि उसकी पत्नी हमेशा उसके खुद के हुक्म की तामील करती रहे । जैसे नागपाल नीना के यश, प्रसिद्धि से ईर्ष्या करता है तो नीना कहती है - "सचाई यह भी है कि आदमी चाहता नहीं है कि उसकी पत्नी को भी यश प्रशंसा मिले और मजे की बात यह है कि प्रसिद्धि और तारीफ़ के लिए आदमी हर घड़ी खुद दौड़ता रहता है ।"[99]

'सुबह की तलाश' उपन्यास में लेखक ने अपने समाज की पूरानी परंपराओं का वर्णन किया है जहाँ लडकी को सजा-धजाकर दिखाने की रस्म को निभाते है । बीना को बड़ी आडंबरपूर्ण ढंग से राजरानी की तरह सजाकर कमरें में लाया जाता है । बीना को इतना सजाया गया था कि वह बिल्कूल 'सोने की मूरत' या 'पोंगल के बैल' की तरह ही लगती थी ।

बीना को सिर से पैर तक सजा के एक प्रदर्शनीय चीज बनाकर लड़के वालों के सामने लाया जाता है । आज आधुनिक युग में भी लड़की की पसंद को जाने बिना ही उसकी लड़केवालों के संमुख नुमाईश की जाती है ।

वर्णनात्मक शैली उपन्यास के कथासूत्र को टूटने नहीं देती तो उसे गतिशील बनाकर उपन्यास की रोचकता बढ़ा देती है ।

ख) साक्षात्कार शैली —

'बीच की दरार' (1978) में साक्षात्कार शैली का प्रयोग किया है । 'पर्सनैल्टीज' पत्रिका का प्रतिनिधि मि.मलिक उपन्यास के नायक तथा नायिका का साक्षात्कार लेने के हेतु नागपाल से मिलता है । नागपाल अपने बारे में बोलने में अत्यंत कंजुष है । नागपाल एक प्रसिद्ध तथा व्यस्त सिने-निर्देशक है । नागपाल का साक्षात्कार लेना अत्यंत कठिण बात थी लेकिन मि.मलिक अपने वाक्-चातुर्य से नागपाल को अपने बारे में बोलने पर मजबूर करता है । नागपाल मलिक को अपने जीवन का पूरा लेखा-जोखा बता देता है । उपन्यास की नायिका तथा नागपाल की पत्नी नीना के जीवन के छिपे पहलुओं को साक्षात्कार शैली से उजागर करते है । नीना का साक्षात्कार लेते समय मि.मलिक को कितने अनकहे, छिपे पहलुओं का पता चलता है । जैसे वह (नीना) कहती हैं - "मैंने उससे शादी नहीं की । वह मेरी सत्यानाशी उम्मीदें ही थी जिन्होंने मुझे रौंद डाला । मैं एक बहुत-ही कच्ची और नाजुक उम्र में सपनों के हाथों बरबाद हो गई ।"[100] नीना के इस कथन पर मि. मलिक नीना से उसके अतीत के बारे में पूछताछ करने लगतें हैं, जिससे कुछ और अनकहे पहलु उजागर हो । नीना मलिक के साक्षात्कार देते वक्त अपने नागपाल के वैवाहिक निराश जीवन के बारे में सबकुछ बताती है । कहती है - "मुझे अपने महान पतिदेव से क्या मिला ? उसने मुझे कुल जमा क्या बनाकर छोड़ा । मैं साल-दर-साल बच्चे जनती रहूँ, बिल्कुल जानवर मादा की तरह और इस बेवकुफ़ी में खुश होती रहुँ कि मैं एक अति-प्रसिद्ध आदमी की बीवी हूँ । इस शख्स ने जो दु:ख मुझे प्यार के नाम पर दिये हैं उनके लिए मैं उसे सौ जिंदगी भी माफ़ नहीं करुँगी ।"[101] नीना साक्षात्कार में ही बता देती है कि अतीत में वह शादीशुदा थी । विधवा हो जाने के बाद नागपाल की शोहरत से मोहित हो कर उसने नागपाल से शादी की थी किंतु नागपाल असल में एक कामांध, वहशी, ईर्ष्यालु है । यह जो नागपाल और नीना की जिंदगी की असलियत समाज से छिपी हुई थी, उसे मि. मलिक ने साक्षात्कार शैली से समाज के संमुख उजागर कर दिया ।

मि. मलिक नागपाल के अंतर्मन की बातें जानने के लिए कुछ ऐसे सवाल करता है कि जिससे नागपाल अनायास ही अपने मनोभावों को व्यक्त कर देता है ।

मि. मलिक जब नागपाल से कहता है – "बच्चों को फख्र की चीज समझना तो हर तरह ठीक है लेकिन कुछ लोग तो अपनी पत्नियों को भी इस तरह साज-सम्भालकर रखते हैं गोया वह कोई नुमाईश में रखनेवाली जिन्स हो ।"[102] मलिक के कथन पर नागपाल कहता है – "इसमें आदमी को दो तरह का सुख मिलता है । एक तो यह कि देखिये मेरी बीवी कितनी खूबसूरत और सलीकेदार है और दूसरे यह कि गौर कीजिए मैंने इसको कितनी हैन्डल विथ केयर (सावधानी से इस्तेमाल किया है) बरता हैं ।"[103] आज फिल्म इंडस्ट्री में नावेल, कहानियाँ, शायरी यह सब के आदर्श रुप को लेकर चलती है – मलिक के इस कथन पर नागपाल कथन दृष्टव्य है जिससे मानव मन असलियत अभिव्यक्त होती है – नागपाल कहता है – "वह इसीलिए कि आदमी वाकई जो कुछ है उससे अलग दिखलाई देना चाहता है । मनुष्य की भावनाएँ आसमान छूना पसंद करती है और आदमी की भूख हमेशा जमीन के ईर्द-गिर्द चक्कर काटती रहती है । प्रेम-मोहब्बत, शायरी, कला वगैरह खुशबु की मोहताज है और पेट की भूख और जिस्म की भूख ठोस चीजों की मोहताज है । आदमी को गेहूँ और गुलाब दोनों एक से जरुरी लगते है ।"[104]

लोगों को उन्हें अपने बारे में बोलने के लिए मजबूर करके, उनके अन्तर्मन की गहराई में झांक कर उनका वास्तव जीवन समाज के संमुख प्रस्तुत करना साक्षात्कार शैली से संभव है । इस तरह यात्रीजी ने बीच की दरार यह उपन्यास साक्षात्कार शैली में लिखा है । 'बीच की दरार' यह लघु उपन्यास होने पर भी अपने आप में बेजोड़ बन चुका हैं ।

ग) डायरी शैली —

डायरी शैली में लेखक अपने जीवन की घटनाओं की प्रतिक्रिया तथा घटना अंकित करता है । डायरी यह लेखक का अपना व्यक्तिगत दस्तावेज होता है । डायरी में जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं और अंत:संघर्ष का चित्रण होता है, जिसे किसी कारणवश प्रकट नहीं किया जाता । डायरी लेखक के अंतर्मन को पढ़कर उसे या उसकी मानसिक, भावनिक स्थिति को समझने का प्रभावी माध्यम डायरी ही होता है । डायरी शैली का उपयोग पात्र की मन:स्थिति का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है ।

से.रा.यात्री लिखित 'दराजों में बंद दस्तावेज' (1969) यह उपन्यास 'डायरी'

शैली में लिखा है । इस उपन्यास का 'दराजों में बंद दस्तावेज' यह शीर्षक पढ़कर ही पाठकों को यह अंदाजा लग जाता है कि यह कई बरसों से दराजों में बंद किसी की जिंदगी होगी जो अनायास यात्री के हाथों में आ गयी हो । वास्तव में यह उपन्यास पूरा पढ़ने पर पता चलता है कि यह संपूर्णत: डायरी शैली में नहीं है क्योंकि करुणा और मौसी इन पात्रों का भी विवेचन हैं । लेकिन अधिकतर यह उपन्यास डायरी के पन्नों की बात से ही स्पष्ट हुआ है । देवेश ठाकूर लिखित 'इसीलिए' उपन्यास भी डायरी शैली का अच्छा उदाहरण हैं । 'दराजों में बंद दस्तावेज' यह उपन्यास प्रथम पुरुष 'मैं' से शुरु होता है ।

लेखक जब मसूरी में जाता है तो उसके कमरे से पूराना फर्निचर हटाते समय एक मेज की दराज़ में जो कागजों का पुलिन्दा था उसे मज़दूरों ने फेंक दिया था लेकिन अनजानी उत्सुकतावश लेखक ने इन कागजों को एकत्र किया और पढ़ने लगा । उन कागजों पर एक ही जगह तिथी थी अन्य कुछ नहीं । लेखक उन पन्नों को पढ़ता गया । उन पन्नों पर लिखी, कई बरसों से दराजों में बंद पड़ी उस कहानी को बिना किसी बदलाव के वह कहानी पाठकों के संमुख रखी है, ऐसा यात्रीजी उपन्यास की शुरुआत में कह देते हैं । पूरे उपन्यास में 'मैं' से कहानी आगे बढ़ती है । करुणा के लिखे पत्र से ही कथा नायक परेश को पता चलता है कि करुणा की असलियत क्या है । यात्रीजी कहते है - "इन्हें लिखनेवाला कोई उपन्यासकार था, जिसने केवल कल्पना के बल पर एक कथा बुनी थी या यह उसकी डायरी थी, जिसे उसने अपने आत्मिक संतोष के लिए लिखा था । ...... उन जीर्ण पृष्ठों में लिखी हुई सामग्री को ज्यों-का-त्यों आपके सामने रख रहा हूँ ।"[105]

इन्सान डायरी में किसी हद तक ही अपनी वैयक्तिक भावनाओं को व्यक्त करता है । डायरी शैली में उपन्यास की कथावस्तु का विकास सहजरुप से नहीं होता फिर भी यह शैली मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लिए अधिक उपयुक्त है । इसमें पात्रों की मन:स्थिति के विश्लेषण का विवेचन किया जाता हैं ।

यात्रीजी ने डायरी शैली का अत्यंत सफल प्रयोग किया है । परेश करुणा से प्यार करता हैं किंतु जब करुणा की असलियत करुणा के ही पत्रद्वारा जाहिर होती है तो परेश की मन:स्थिति का वर्णन डायरी में व्यक्त हुआ है । डायरी

शैली में लिखे हुए यात्रीजी के इस उपन्यास की शुरुआत प्रथम पुरुष से होती हैं। इसमें हर घटना के कथन के पीछे 'मैं' ही है। उदाहरणार्थ - "मेरे अन्तर्मन में बार-बार यहीं सवाल उठ रहा था कि मुझे यहाँ आने की क्या जरुरत थी - क्या अपनी खिड़की से मुझे यह सब दिखाई न दे सकता था। उन लोगों ने मेरे वहाँ रहते न तो आपस में कोई बात की, न मेरी ओर देखा।"[106]

जैसा मैंने कहा है कि यह उपन्यास पूर्णत: डायरी शैली में नहीं लिखा है किंतु पूरे उपन्यास की कथा तो डायरी के पन्नों के माध्यम से ही पाठको के संमुख अभिव्यक्त हुई है। डायरी शैली के प्रयोग से 'दराजों में बंद दस्तावेज' यह यात्रीजी का उपन्यास शिल्पगत सौंदर्य की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक बन चुका है। इस उपन्यास में डायरी शैली का प्रयोग करके वास्तवता का आभास निर्माण किया है।

घ) संवाद शैली —

संवाद शैली की सार्थकता छोटे-छोटे एवं सहज, स्वाभाविक संवादों के माध्यम से ही संभव है। यात्रीजी के उपन्यास में इन संवादों का सफल एवं सार्थक प्रयोग हुआ है। इस शैली की सहायता से रचनाकार अमूर्त भावों को और वस्तुओं को गति प्रदान करता है। डॉ. दुर्गाशंकर मिश्रजी के शब्दों में - "इसमें उपन्यासकार पात्रों के भावात्मक वार्तालाप के साथ-साथ अपनी उपयुक्त टिप्पणीयों और पात्रों के अनुभव चित्रण तथा कहीं-कहीं उसके अधूरे वाक्यों के माध्यम से एक भव्य वातावरण का निर्माण करते हुए, उनकी आंतरिक भावनाओं की सफल अभिव्यंजना और उद्घाटन करता है।"[107] संवाद मुख्यत: वैयक्तिक का जीवन से संबंधित समसामायिक संदर्भो से संपृक्त परिवारीक समस्याओं, आपसी कलह आदि विषयों से संबंधित है। यात्रीजी के 'सुबह की तलाश' उपन्यास में वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण करते समय संपूर्ण व्यवस्था तथा, पुरानी रस्मों के प्रति आक्रोश प्रकट किया है। जैसे - "अपना देश कितना महान है और कितनी उत्कृष्ट परंपराओं से विभुषित है कि जहाँ औरतें नुमाईश की चीजें होती हैं।"[108] इस तरह व्यंग्यात्मक शब्दों से अथवा संवादों के माध्यम से आज की वर्तमान स्थिति का वर्णन किया है। ये संवाद विविध रुपों में व्यक्त होते है। इनमें कहीं एकालाप का भी प्रयोग होता है।

यात्रीजी के 'बीच की दरार' उपन्यास में एकालाप संवाद के माध्यम से नीना की मानसिक स्थिति तथा नीना के और उसके पती नागपाल के बीच की दरार या आपसी कलह स्पष्ट हो जाता है । उदा. "मैनें उससे शादी नहीं की । यह मेरी सत्यानाशी उम्मीदें ही थी जिन्होंने मुझे रौंद डाला । मैं एक बहुत-ही कच्ची और नाजुक उम्र में सपनों के हाथों बरबाद हो गई ।"[109] नीना के इस संवाद से उसकी मनोवस्था का पता चलता है । नीना और नागपाल के आपसी संबंध कैसे थे और है यह नीना के निम्न संवादों से स्पष्ट होते है - "कम-से-कम एक रात तो उससे मेरा पिण्ड छूट ही सकता है — वह तो मेरी हर रात को नर्क बना देता हैं ।"[110] मलिक के संवाद या कथन से भी नागपाल जैसे उच्चशिक्षित लोगों की असलियत स्पष्ट होती है — "अपने घरों में और काम में शराफत का जो नकाब पहने रहते हैं उसे काकटेल पार्टीज मे आते ही उतार कर एक तरफ फेंक देते हैं ।"[111] "मुझे अपने महान पतिदेव से क्या मिला ? उसने मुझे कुल जमा क्या बनाकर छोड़ा । मै साल-दर-साल बच्चें जनती रहूँ बिल्कुल जानवर मादा की तरह और इस बेवकुफी में खुश होती रहूँ कि मैं एक अति प्रसिद्ध आदमी की बीवी हूँ ।"[112] नीना के इस संवाद से नागपाल की असलियत स्पष्ट होती है ।

संवादो में पात्र के एवं विषय के अनुसार भाषा होती है इसी कारण संवादों में अद्भूत संप्रेषण शक्ति होती है । संवादों के माध्यम से ही पात्रों के स्वभाव का परिचय भी मिलता है । संवादो के माध्यम से ही पात्रों के अंतर्मन की व्यथा, कथा, भाव-भावना, समस्या, प्यार, ईर्ष्या आदि की अभिव्यक्ति हो पाती है । यात्रीजी ने अपने आलोच्य उपन्यास में संवाद शैली का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया है ।

च) पत्रात्मक शैली —

यात्रीजी के 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में अत्यंत अल्पमात्रा में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है । वस्तुत: इस शैली के उपन्यासों की कथावस्तु का विकास अपने प्रिय तथा आत्मिय जनों को लिखे गये पात्रों के माध्यम से होता है । पत्र के माध्यम से कोई भी पात्र अपने मन की बातों को सहज रुप से कह सकता है, जो बात या जिस बात को प्रत्यक्ष कहने में वह असमर्थ हो ।

पात्र के अंतर्मन में होनेवाली हलचल तथा उसके मन की गूढतम बातों को सहजता से प्रकट करनें में खास तौर से यह शैली उपयुक्त है । उदाहरणार्थ यात्रीजी के

'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास की नायिका वास्तव में एक कॉलगर्ल हैं। किंतु उपन्यास का नायक-परेश करुणा को चरित्र्य संपन्न लड़की समझता है । करुणा परेश जैसे निरीह आदमी को धोखा नहीं देना चाहती है, इसीलिए करुणा एक पत्र के माध्यम से अपनी भावना तथा अपनी असलियत जाहिर करती है । करुणा के लिखे पत्र से ही करुणा के कॉलगर्ल होने की बात पाठकों को पता चलती है । करुणा अपनी असलियत भोले, निरीह परेश को प्रत्यक्ष कहने में असमर्थ थी इसीलिए उसने यह बात पत्र के माध्यम से परेश को बताती है । इस शैली में अपने मनो:भावों को नि:संकोच रुप से प्रकट किया जाता हैं ।

इसतरह यात्रीजी ने अपने 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में अल्पमात्रा में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है, जो उपन्यास की सफलता में महत्त्वपूर्ण साबित हुआ है । पत्र के माध्यम से करुणा अपने आक्रांत, त्रस्त मन को सांत्वना देने की कोशिश करती है । पत्रात्मक शैली शिल्प की दृष्टि से आकर्षक बनी है।

छ) पूर्व-दीप्ति शैली —

पूर्व-दीप्ति शैली को ही 'प्लैश बॅक' शैली कहते हैं । इस शैली में जीवन की घटनाओं का स्मृति के रुप में वर्णन होता हैं । पूर्व दीप्ति शैली में अतित की ही घटनाएँ आती है, जो वर्तमान जीवन की किसी घटना अथवा स्थिति को सार्थक बना सकती है । इसमें पात्रों के मस्तिष्क में उठनेवाली अतित की घटनाओं को स्मृति के रुप में अभिव्यक्त किया जाने के कारण उनका कथावस्तु में कोई नियत क्रम नहीं होता । इस शैली में जीवन के अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण क्षणों को अतीत की घटनाओं की स्मृति को लिपिबध्द करके दीप्त किया जाता है ।

इस पद्धति का दोष यह है कि इस शैली के कारण कथावस्तू की समग्रता में असंतुलन पाया जाता है । इस शैली का मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लिए खास तौर पर उपयोग किया जाता है । यात्रीजी ने बीच की दरार उपन्यास में इस शैली का प्रयोग किया है । इस उपन्यास में नीना के अतीत के जीवन के कुछ प्रसंगों को व्यक्त किया है, जिनका वर्तमान की घटनाओं से सीधा संबंध है । जैसे नागपाल से शादी करने के बाद नीना को नागपाल के कामांध, वहशी

रुप को देखकर अपने अतीत की याद आती है । नीना अतीत में खो जाकर कहती है - "पहली शादी विठोबा से ही हुई थी और उसने छह महिनों में ही मेरी हालत खराब कर दी थी । वह मुझे हर तरह की फिल्मों में काम करने के लिए मजबूर करने लगा । उसकी ज्यादती और अत्याचार बराबर बढ़ते चले गये । XXXXXXX विठोबा ने कभी भी चैंन नहीं लेने दिया था । उसकी इस अप्रत्यशित मृत्यु से मैं दु:खी होने के बजाय त्रस्त ही अधिक हुई ।"[113] नीना अपने अतीत में घटी विठोबा से शादि की घटना तथा उसके बर्ताव का वर्तमान जीवन में नागपाल से तुलना करके कहती है । "इसने मुझ पर अपनी शराफत का चारों तरफ से ऐसा जाल बिछा रखा है कि इसके कैदखाने से बाहर निकलना मेरे लिए आसान नहीं रह गया हैं ।"[114]

इसतरह अनेक प्रसंगो में नीना अपने अतीत में खो जाती है । जो घटनाएँ वर्तमान जीवन से थोड़ी मात्रा में ही क्यों न हो लेकिन संबंधित है । इसतरह इस शैली में जीवन की घटनाओं का वर्णन स्मृति के रुप में होता है ।

ज) चेतनाप्रवाह शैली —

चेतनाप्रवाह शैली में छोटी-से-छोटी सुप्त भावनाएँ चित्रित होती है । इस शैली में मानवजीवन के आंतरिक यथार्थ का चित्रण होता है । ह्दय की प्रत्येक धडकन के उत्थान और पतन का वास्तव चित्रण होता है । इस शैली में बाहर से दिखाई देनेवाली हलचल के पीछे स्थित चेतनमन की संवेदना तथा स्थिति को अभिव्यक्ति दी जाती है ।

चेतनाप्रवाह शैली में पात्रों के मन का तीव्र अंत:संघर्ष चित्रित किया जाता है । 'बीच की दरार' उपन्यास में नीना के मस्तिष्क में अतीत की संवेदनात्मक जिंदगी की शृंखला है । नीना का मन अस्थिर रहने के कारण कभी अतीत की ओर मुड़ता है तो कभी भविष्य की ओर । सच तो यह है कि इस शैली के लेखकों के लिए भूतकाल नहीं होता । केवल वर्तमान का विकास होता है । 'बीच की दरार' में भी नीना कभी विठोबा के बारें में सोचती है तो कभी नागपाल के बारे में । वह अपने अतीत को कोसती रहती है तो वर्तमान जीवन के जेलखाने की जिंदगी से अपना पिण्ड छुड़ाना चाहती है । यहाँ नीना का मन अतीत और वर्तमान दोनों से जुड़ा हुआ है । इसमें नीना के मानसिक क्रियाओं के उतार-चढाव को चित्रित किया है । इस उपन्यास में एक बात से ही दूसरी (अतीत की) बात उत्पन्न होती है और पून: अपने मुख्य बात की चर्चा की ओर मुड़ती है ।

इसप्रकार चेतनाप्रवाह शैली में लेखक पात्र के मन में प्रवाहित होनेवाली असंबंध तथा अस्थिर भावनाओं को चित्रित करता है । इन भावनाओं में पात्र के मन में उठनेवाले विचारों को, विकारों को तथा मनोभावों को अभिव्यक्त किया जाता है ।

उदाहरणार्थ "कम-से-कम एक रात तो उससे मेरा पिण्ड छूट ही सकता है । वह तो मेरी हर रात को नर्क बना देता है । शरीर सिर्फ आत्मा का गुलाम होता है .....कोई भी और कहीं भी मामुली-सी शर्तो पर एक जिस्म हासिल कर सकता है मगर आत्मा की गहराइयो को छुए बगैर देह को मसलते-कुचलते रहने में अब मुझे कोई दिलचस्पी बाकी नहीं रह गई है ।"[115] मानवी मन की क्रम हीन, विसंगत प्रक्रिया को इस शैली के माध्यम से व्यक्त करके उपन्यास का रुप दिया जाता है ।

इसतरह मानव जीवन के आंतरिक यथार्थ का चित्रण इस शैली में किया जाता है । जैसे बाहर से शांत दिखाई देनेवाली करुणा के मन में अत्यंत कोलाहल था । वह संवेदनशील होने के कारण निरीह परेश को धोखा नहीं देती बल्कि वह अपने मन को सांत्वना देते हुए परेश की जिंदगी से दूर चली जाती है । उसके चेतन मन आंतरिक यथार्थ को, अंत:संघर्ष को सफलता से चेतनाप्रवाह शैली में अभिव्यक्त किया है ।

निष्कर्ष —

यात्रीजी ने अपने भाषा-शैली के द्वारा नवीनता को प्रकट किया है । उपन्यास के अनुरुप उन्होंने विविध शैलियों का उपयोग किया है । यात्रीजी ने किसी निश्चित शिल्प-विधि का प्रयोग नहीं किया । 'बीच की दरार' साक्षात्कार पद्धति में लिखा उपन्यास होने पर भी उसमें चेतनाप्रवाह शैलीद्वारा नीना के आंतरिक यथार्थ का चित्रण किया है । साथ ही इसी उपन्यास में पूर्व-दीप्ती शैली का भी चित्रण मिलता है । पत्रात्मक शैली के सहारे उन बातों को भी प्रकट किया जाता है जिन्हें प्रत्यक्ष में कहने में करुणा स्वयं असमर्थ है । पत्रात्मक शैली का 'दराजों में बंद दस्तावेज' उपन्यास में अल्पमात्रा में प्रयोग किया है । 'सुबह की तलाश' यह उपन्यास वर्णनात्मक शैली में लिखा है । 'दराजों में बंद दस्तावेज' डायरी शैली में पाठकों के संमुख प्रस्तुत किया है । पत्रात्मक और डायरी शैलियों के माध्यम से अंतर्मन की गूढ एवं रहस्यमय बातों की अभिव्यक्ति अत्यंत सुंदर ढंग से हुई है ।

साक्षात्कार शैली में लिखा 'बीच की दरार' उपन्यास संवाद शैली को भी प्रयुक्त करता है । संवादो के सहारे ही नीना अपनी आंतरिक व्यथा तथा नागपाल के असलियत

का साक्षात्कार कराती है । साथ ही अपना अतीत भी मि. मलिक को बताती है । अपने अतीत की घटनाओं को नीना बताती है, जो वर्तमान से जुड़ी एक कड़वी सच्चाई है । इस सच्चाई को यात्रीजी ने पूर्व-दीप्ति शैली के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

से.रा. यात्री आलोच्च उपन्यासों के शिल्प-कथ्य को यथार्थ तथा सार्थक ढंग से संप्रेषित करने में सफल हुए है साथ ही तीनों उपन्यास भी । इस तरह यात्रीजी ने विविध शैलियों का सफल चित्रण अपने तीनों उपन्यासों का उपयोग में किया है । यात्रीजी ने उपन्यास की कथावस्तु के अनुकूल शैलियों का उपयोग किया है । यात्रीजी की लेखनशैली इतनी सुंदर, सहज तथा प्रवाहमयी है जो दिल को छू जाती है ।

यात्रीजी की भाषा-शैली और शिल्प सरल एवं बोधगम्य हैं । पात्रों के परिवेश के और तक्के के मुताबिक यात्रीजी ने भाषा-शैली को उठाया है । यात्रीजी को आत्मकथनात्मक शैली प्रिय लगती है, उनके अधिकतर उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग हुआ है । उनका वाक्य-विन्यास सरल और समृध्द हैं । भाषा-शैली की दृष्टि से आलोच्च उपन्यास सफल हैं ।

संदर्भ सूची :-

1) डॉ. सुरेश सिन्हा - हिंदी उपन्यास - लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद द्वितीय संस्करण 1972 पृष्ठ-394.

2) वही - पृष्ठ-392.

3) डॉ. शुक्ल बैजनाथप्रसाद - भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में युगचेतना-प्रेमप्रकाशन मंदिर दिल्ली प्र.सं. 1977 पृ.447.

4) प्रा. पाण्डेय सतीश -कथाशिल्पि देवेश ठाकूर - अरविंद प्रकाशन,मुंबई प्र.संस्करण 1986 पृष्ठ-57.

5) डॉ.हिरे. एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व -अन्नपुर्णा प्रकाशन कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.251.

6) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.64

7) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.50,44,7

8) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 144, 72, 169, 171, 154,

9) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.12,15

10) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.91

11) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 143,57,68

12) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ.24

13) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.128,167

14) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.30

15) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमिन प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 21, 24, 25, 32, 33, 107, 49, 50, 58, 17, 10, 92, 50, 95, 87, 70, 87.

16) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ. 23, 27, 53, 94, 10, 14, 31, 18, 9, 11, 10, 88, 75, 62, 9, 7, 14, 8, 8, 31, 31, 75, 51, 79, 74, 10, 12, 67, 12, 9, 78, 70, 7, 74, 31, 8, 51, 27, 82.

17) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.18, 15, 9, 18, 77, 28, 58, 15, 73, 40, 10, 26, 90, 90, 12, 92, 93, 96, 97, 99, 100, 100, 101, 102, 116, 100, 100, 124, 90, 119, 120, 165, 100, 124, 90, 119, 120, 165, 100, 106, 122.

18) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमिन प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 63, 63,15,15,64,64,64,64,70,70,100.

19) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ. 104, 104, 16, 16, 8, 16, 73, 13, 19, 21, 22, 23, 29, 29, 16, 30, 30, 17, 102, 102, 58, 103, 105, 105, 101, 99, 99, 19, 97, 98, 74, 22, 50, 15.

20) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.9, 9, 65, 9, 9, 10, 19, 17, 20, 21, 21, 23, 23, 43, 10, 10, 51, 105, 105, 104, 104, 101, 20.

21) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 54, 54, 54, 33, 33, 42, 42, 41, 50, 42, 51, 136, 40, 44, 54, 37, 135, 39, 36, 38, 33, 35, 40, 53, 51, 33, 37, 37, 39, 38.

22) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 88, 81, 57, 57.

23) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.84, 60, 60, 83.

24) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 13, 80, 34, 134, 44, 34, 85, 18, 86, 90, 92, 107, 138, 138, 140, 86,176, 142.

25) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 73, 80, 103, 73, 64, 71.

26) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.83, 83, 83, 86, 83, 80, 78.

27) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 141, 81, 133, 133, 134, 132.

28) यात्री से.रा. - सुबह की नलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 59, 78, 79, 126, 81, 2.

29) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 21.

30) वही - पृ. 20.

31) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.54, 54, 74.

32) यात्री से.रा. - सुबह की नलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.41, 43, 45, 48.

33) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 25.

34) वही - पृ. 103.

35) यात्री से.रा. - सुबह की नलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.16.

36) वही - पृ.67.

37) यात्री से.रा. - सुबह की नलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.68.

38) वही - पृ.120.

39) वही - पृ.139.

40) वही - पृ.118.

41) वही - पृ.121.

42) वही - पृ.81.

43) वही - पृ.121.

44) वही - पृ.121.

45) वही - पृ.119.

46) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 18.

47) डॉ. मानधाने धनराज - हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - ग्रंथम, रामबाग, कानपुर प्र.सं.1971 पृ.38.

48) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 38.

49) वही - पृ. 40.

50) वही - पृ.99.

51) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.48

52) वही - पृ.48

53) वही - पृ.81

54) वही - पृ.81

55) वही - पृ.84

56) वही - पृ.81

57) वही - पृ.91

58) वही - पृ.88

59) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.23.

60) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 90.

61) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.89

62) वही - पृ.77

63) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 87.

64) वही - पृ. 118.

65) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 118.

66) वही - पृ. 143.

67) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 106.

68) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.46

69) वही - पृ.47

70) वही - पृ.66

71) वही - पृ.82

72) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ. 29.

73) डॉ.हिरे. एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व -अन्नपुर्णा प्रकाशन कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.268.

74) डॉ. मानधाने धनराज-हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास-ग्रंथम, रामबाग, कानपुर प्र.सं.1971 पृ.454

75) डॉ.हिरे. एम्.बी. - कथाकार से.रा.यात्री व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व -अन्नपुर्णा प्रकाशन कानपुर प्र.सं. 1993 पृ.268.

76) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.13.

77) वही - पृ.17

78) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.11,12.

79) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.36

80) वही - पृ.13

81) वही - पृ.12

82) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.68.

83) वही - पृ.100.

84) वही - पृ.108.

85) वही - पृ.116.

86) वही - पृ.35.

87) यात्री से.रा. - बीच की दरार - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.35

88) वही - पृ.35

89) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.114.

90) वही - पृ.114.

91) डॉ. श्यामसुंदरदास-साहित्यलोचन-इंडियन प्रेस लि.प्रयाग. नववाँ सं. संवत 2006 पृ. 95

92) डॉ. गुलाबराय-सिध्दांत और अध्ययन-प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली प्र.सं.1951 पृ.180

93) डॉ. दुबे तहसिलदार - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में शिल्पविधि का विकास - नटराज पब्लिशिंग हाऊस, हरियाणा. प्र.सं.1983 पृ.16

94) डॉ. मिश्र दुर्गाशंकर - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - हिंदी साहित्य भांडार, लखनऊ. प्र.सं.1976 पृ.34

95) डॉ. जैन सुरेशकुमार - हिंदी और मराठी रेखाचित्रोंका तुलनात्मक अध्ययन - अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. 1985 पृ.211.

96) डॉ. मिश्र दुर्गाशंकर - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - हिंदी साहित्य भांडार, लखनऊ. प्र.सं.1976 पृ.207

97) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.9.

98) वही - पृ.77.

99) वही - पृ.22.

100) यात्री से.रा. - बीच की डगर - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.40.

101) वही - पृ.82

102) वही - पृ.88.

103) वही - पृ.17.

104) वही - पृ.31.

105) यात्री से.रा. - दराजों में बंद दस्तावेज - अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, प्र.सं 1969 पृ. 13.

106) वही - पृ. 20.

107) डॉ. मिश्र दुर्गाशंकर - अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - हिंदी साहित्य भांडार, लखनऊ. प्र.सं.1976 पृ.267.

108) यात्री से.रा. - सुबह की तलाश - आत्माराम एंण्ड सन्स, दिल्ली, प्र.सं 1994 पृ.11,12.

109) यात्री से.रा. - बीच की डगर - भावना प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं 1978 पृ.82

110) वही - पृ.94

111) वही - पृ.74

112) वही - पृ.88

113) वही - पृ.84

114) वही - पृ.88

115) वही - पृ.94